ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 156-158
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

भारतीय सिनेमा एवं महिला सशक्तिकरण

सुधीर कुमार गुप्ता

असिस्टेंट प्रोफेसर–समाजशास्त्र विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय सुदिष्टपुरी– रानीगंज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 28.02. 2022, Revised- 05.03. 2022, Accepted - 08.03.2022 E-mail: guptasudheer5@gmail.com

सारांशः– *किसी भी सभ्य समाज की स्थिति उस समाज की स्त्रियों की दशा देखकर ज्ञात की जा सकता है। समाज में महिलाओं की स्थिति में समय–समय पर परिवर्तन होता रहा है। महिलाओं को हमेशा से पुरुषों की केवल जीवनसंगिनी माना गया है। भारतीय सामाजिक संरचना में पुरुषों का सदा उच्च स्थान रहा है तथा प्रारंभ से ही उसके पास आर्थिक सबलता और उत्पादन के साधनों पर एकाधिकार रहा है। भारतीय समाज की परंपरागत व्यवस्था में महिलाएं आजीवन पिता, पति एवं पुत्र के संरक्षण में जीवन यापन करती रही हैं। भारतीय संविधान में पुरुषों एवं महिलाओं को समान दर्जा एवं अधिकार दिए जाने के बावजूद इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि विकास और सामाजिक स्तर की दृष्टि से महिलाएँ अभी भी पुरुषों से काफी पीछे हैं।*

कुंजीभूत शब्द– जीवन संगिनी, आर्थिक सबलता, परंपरागत व्यवस्था, जीवन यापन, वैश्विक स्तर, आत्मनिर्भर।

महिला परिवार की आधारशिला हैं और सामाजिक विकास उसी के सद्प्रयासों से संभव है। वर्तमान में भारतीय सिनेमा महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वैश्विक स्तर पर महिला अधिकारों के लिए बुलंद होती आवाज विभिन्न रूपों में हमारे सामने हैं। वर्तमान परिदृश्य में देखा जाए तो भारतीय सिनेमा ने महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, एवं स्वाभिमान है, जिसे मजबूत करके ही महिलाओं को सशक्त किया जा सकता है।

भारतीय सिनेमा में विगत कई दशकों में कई फिल्में बनाई गई जिन्होंने महिलाओं की सशक्त छवि को प्रदर्शित किया है। भारतीय सिनेमा हमेशा से समाज को प्रतिबिंबित करता रहा है। समय के साथ जैसे–जैसे समाज बदलता है, उस दौर का सिनेमा भी बदल जाता है। समाज में जो हो रहा है यह उसे बड़े पर्दे पर दिखाता है। भारतीय समाज सदा से पुरुष प्रधान समाज रहा है। भले ही विगत कई वर्षों में उनकी से स्थिति में थोड़ी तब्दीली आई हो लेकिन महिलाओं की वास्तविक स्थिति हमेशा दोयम दर्जे की अभी भी बनी हुई है तथा सिनेमा में भी इसका प्रभाव देखने को मिलता है।

भारतीय सिनेमा में काफी पहले से ही समाज के अलग–अलग वर्गों की सामाजिक स्थितियों को उठाया जाता रहा है। महिलाओं की स्थिति पर भारतीय सिनेमा की नजर काफी पहले से रही है, तरह–तरह की फिल्मों के माध्यम से भारतीय सिनेमा में इसे दिखाया जाता रहा है। सिनेमा ने महिलाओं के सामाजिक स्तर को उठाने एवं उन्हें सशक्त करने में बहुत मदद किया है। भारतीय सिनेमा में वैसे तो बहुत सी फिल्में बनी हैं तथा बन रही हैं जो महिलाओं की विभिन्न समस्याओं और सामाजिक मुद्दों पर हमारा ध्यान केंद्रित करती है। प्रस्तुत अध्ययन में कुछ प्रमुख फिल्मों के माध्यम से महिलाओं की जिंदगी के विभिन्न पहलूओं और उनके आयामों को दिखाने का बखूबी प्रयास किया गया है।

मदर इंडिया– भारतीय सिनेमा की यह फिल्म सालों पुरानी है लेकिन महिला सशक्तिकरण की बात जब भी होती है तो 'मदर इंडिया' का जिक्र जरूर होता है। 1957 में आई महबूब खान द्वारा लिखित और निर्देशित इस फिल्म मंर नरगिस, सुनील दत्त, राजेंद्र कुमार और राजकुमार ने मुख्य भूमिका निभाई थी। यह सिनेमा गरीबी से पीड़ित गाँवों में रहने वाली औरत राधा की कहानी है जो कई मुश्किलों का सामना करते हुए अपने बच्चों का पालन–पोषण करती है और गरीबों का शोषण करने वाले लोभी जागीरदार के अत्याचार से बचने के लिए कड़ी मेहनत करती है।

'पति नहीं तो क्या मैं तो हूं, बच्चों के सिर पर पिता का साया नहीं तो क्या मां तो है, हालात साथ नहीं है तो क्या हौसला तो है।' फिल्म मदर इंडिया का यह संवाद उस दौर में महिला सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण संदेश देता है। एक महिला अपने पति के बिना भी अपने बच्चों की परवरिश कर सकती है। पहले भारतीय समाज में ऐसी सोच नहीं थी। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष परिवार का मुखिया होता था एवं पुरुष ही परिवार का पालन पोषण करता था। लेकिन मदर इंडिया ने इस मिथक को तोड़ा यहाँ महिला को एक नए रूप में समाज के सामने पेश किया गया। फिल्म 'मदर इंडिया' की कहानी राधा की है, जो नवविवाहिता के रूप में गांव में आती है और घर–गृहस्थी की जिम्मेदारी उठाने में पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। लालची साहूकार सुखी लाला से लिए गए कर्ज के जाल में उसका परिवार फँस जाता है। खेती मौसम के रहमों करम पर निर्भर है, गरीबी साया बनकर पीछे पड़ी हुई है। ऐसे में एक दुर्घटना में अपने दोनों हाथ गँवाने के बाद स्वयं को बोझ मानकर शर्मिंदा पति श्यामू भी साथ छोड़ जाता है। अकेली राधा सारी विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करती है। उसकी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

खूबियों को देख कर उसे गांव वाले न्याय की प्रतीक और भगवान के रूप में मानते हैं। अपने सिद्धांतों के प्रति सच्ची रहते हुए इंसाफ की रक्षा के लिए गलत रास्ते पर जा रहे अपने बेटे की जान लेने में भी पीछे नहीं हटती है। राधा के रास्ते में कई विपरीत परिस्थितियां आती है लेकिन वह अपने मूल्यों और सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं करती है। फिल्म मदर इंडिया बुरे से बुरे हालात में भी हार न मानने और अपनी तकदीर स्वयं अपने हाथों से लिखने की जिद ठानने वाली सशक्त स्त्री की करुण गाथा है।

बैंडिट क्वीन– 'बैंडिट क्वीन' वीरांगना फूलन देवी की कहानी है। जिसमें सीमा विश्वास ने फूलन देवी का किरदार निभाया है जिसे 1995 में निर्देशक शेखर कपूर ने निर्देशित किया है। यह फिल्म महिला डकैत फूलन देवी के जीवन पर बनाई गई थी जिसका संबंध बेहमई सामूहिक बलात्कार कांड से है। फूलन देवी को दस्यु सुंदरी के नाम से भी जाना जाता है। फिल्म का निर्माण तब हुआ जब फूलन देवी जेल में थी फिल्म में उनके गरीबी वाले बचपन से लेकर, बाल–विवाह, सामाजिक ढोंग ढकोसलों का शिकार होना, उँच–नीच, जात–पात जैसे गंदी मानसिकता वाले समाज में रहना, दुष्कर्म और प्रताड़ना से तंग आकर एक बागी बन जाने तक की पूरी कहानी है। फिल्म में फूलन देवी के मार्मिक जीवन को जीवंत रूप में चित्रित किया गया है। फिल्म में फूलन देवी गरीब, अशिक्षित, असहाय और निम्न जाति वर्ग से संबंधित है। फूलन का गुनाह निम्न जाति में पैदा होना गरीब होना तथा औरत होना है। इन वजहों से उस पर कई तरह के जुल्म किए जाते हैं समय के साथ–साथ उस पर जुल्म बढ़ते जाते हैं यहां तक कि उसके साथ वस्तु जैसा व्यवहार किया जाता है तथा उसका कई बार बलात्कार एवं सामूहिक बलात्कार किया जाता हैं। गरीब व निम्न जाति में पैदा होने के बावजूद उसमें विरोध करने की क्षमता भरपूर थी। वह कहती है कि सवर्ण हमें भोग्य समझते हैं तथा दलित पुरुष भी मात्र संपत्ति के रूप में देखते हैं। इन सब से बदला लेने के उद्देश्य से वह डाकुओं के गैंग में शामिल हो जाती है। लेकिन वहाँ पर भी उसके साथ दुष्कर्म किये जाते हैं। इन सभी प्रताड़नाओं के बावजूद वह एक वीरांगना के रूप में अपने को स्थापित करती है तथा सबसे बदला लेती है। इस फिल्म के माध्यम से शेखर कपूर ने जाति जैसी भयावह कुप्रथा और 'औरत एक वस्तु' जैसे विषय को बड़े ही मार्मिक ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत किया है। फिल्म के माध्यम से शेखर कपूर ने बताया है कि समाज हमेशा औरतों को क्यों पाठ पढ़ाता है, पुरुषों को क्यों नहीं, क्या जाति प्रथा मानवता से ऊपर है। इस फिल्म ने न केवल स्त्रियों के ऊपर समाज द्वारा किए जा रहे अत्याचार को चित्रित किया अपितु उनमें गलत कृत्य का विरोध करने के साहस को भी उत्पन्न किया।

इंग्लिश विंग्लिश– साल 2012 में आई फिल्म 'इंग्लिश विंग्लिश' एक ड्रामा कॉमेडी फिल्म है, जिसमें मुख्य भूमिका अभिनेत्री श्रीदेवी ने निभाई है। फिल्म की कहानी एक, गृहणी शशि के बारे में है, जो परिवार के लिए सब कुछ करती है, लेकिन सिर्फ अंग्रेजी न आने के कारण उसे अपने मॉडर्न बच्चों और हाई–फाई पति के साथ तालमेल बिठाने में दिक्कत होती है। जिसके कारण कई बार उसे अपने घर में अपमानित भी होना पड़ता है। फिल्म में दिखाया गया है कि शशि एक अच्छी पत्नी और मां होने के बाद भी बच्चे और पति अच्छी अंग्रेजी न बोल पाने के चलते उसे नीचा दिखाते हैं। लेकिन इसके बावजूद वह हीन भावना का शिकार नहीं होती है और इसी बीच शशि अपनी बहन की बेटी के शादी के लिए न्यूयॉर्क जाती है। वहां उसका परिचय ऐसे कई लोगों से होता है जिनको अंग्रेजी नहीं आती लेकिन इसको लेकर न उनमे शर्मिंदगी है और नही उनका मजाक उड़ाया जाता है। भारत, स्पेन, चीन, फ्रांस से आए लोग अमेरिका में रहने के लिए अंग्रेजी सीखते हैं। शशि भी अंग्रेजी सीखने का फैसला करती है और एक कोचिंग सेंटर में दाखिला लेती है तथा धाराप्रवाह अंग्रेजी सीख कर सबको हैरान कर देती है। फिल्म 'इंग्लिश विंग्लिश' में एक महिला के सशक्त पक्ष को दिखाया गया है जो हर भूमिका मजबूती से निभाती है और मौका मिलने पर अपनी अंतर्निहित संभावनाओं को उजागर करने में सक्षम होती है।

क्वीन– साल 2014 में आई फिल्म क्वीन ने तमाम सामाजिक मान्यताओं को धराशाई कर दिया। फिल्म में मॉडर्न जमाने की एक सीधी–सादी लड़की की कहानी एक रोचक ढंग से दिखाई गई है, जो माता–पिता के मर्जी से शादी करना, पति की मर्जी से जीवन के फैसले लेने को ही अपना धर्म मानती है। फिल्म में मजेदार ट्विस्ट तब आता है जब लड़का शादी करने के लिए मना कर देता है और लड़की अकेले हनीमून पर चली जाती है। इस फिल्म में कंगना रनौत और राजकुमार मुख्य भूमिका में थे। रानी (कंगना रनौत) 24 साल की पंजाबी लड़की है जो दिल्ली में रहती है। उसका परिवार रूढ़िवादी विचारधारा का पोषक है, हर वक्त पिता और भाई उस पर नजर रखते हैं। रानी की जिंदगी में तूफान तब आता है जब उसका मंगेतर उसे सगाई तोड़ देता है। वह परेशान हो जाती है लेकिन इस परिस्थिति में विलाप करने की बजाय जिंदगी में आगे बढ़ने का निर्णय लेती है। एम्स्टर्डम से पेरिस तक हनीमून यात्रा के दौरान उसे जिंदगी की कई नई सीख मिलती है जो एक महिला के जीवन के मायने बदल देती है। रानी इस दौरान पहले से कहीं ज्यादा मजबूत और आत्मनिर्भर हो जाती है।

सीक्रेट सुपरस्टार– सीक्रेट सुपरस्टार एक ऐसी लड़की कहानी है जिसका एक सपना है और वह अपने सपनों में

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

वह रंग भरना चाहती है लेकिन उसकी राह में ढ़ेर सारी अड़चनें हैं। अपने सपनों को पूरा करने की उसकी जो यात्रा फिल्म में दिखाई गई है वह आप को भावुक कर देती है। मंजिल सबको पता है लेकिन उस तक जाने का जो सफर है, वह फिल्म में बहुत बखूबी दिखाया गया है।

बड़ोदरा की रहने वाली 15 साल की इंसिया (जायरा वसीम) एक पापुलर सिंगर बनना चाहती है उसकी मां नजमा (मेहर वीज) अपनी बेटी की सपनों को पंख देना चाहती है। लेकिन वहीं दूसरी और उसका स्त्रियों से द्वेष रखने वाला पिता का घर में आतंक है। मां की सलाह पर इंसिया इंटरनेट पर सीक्रेट सुपरस्टार के नाम से एक चौनल बनाती है जिस पर वह बुर्का पहनकर अपने गाने के वीडियो डालती है। जल्द ही उसका वीडियो वायरल हो जाता है और वह प्रसिद्ध हो जाती है। उसके पिता बेहद क्रूर हैं। इंसिया की मां के साथ वह खराब व्यवहार तो करते ही हैं साथ ही इंसिया का गाने के प्रति लगाव भी उन्हें सख्त नापसंद है। मां उसको जितनी आजादी दे सकती है देती है लेकिन पिता तो इंसिया को सपने देखने की आजादी भी नहीं देते। सीक्रेट सुपरस्टार फिल्म के माध्यम से कहानीकार ने यह दिखाया है कि किस तरह से एक 14 साल की लड़की ने अपनी इच्छाशक्ति और लगन से न केवल अपने सपने को पूरा करती है बल्कि अपनी मां को भी वह अपने पिता के नर्क रुपी संसार से बाहर निकलती है। फिल्म सीक्रेट सुपरस्टार एक सशक्त लड़की की कहानी को प्रदर्शित करती है।

निष्कर्षत– तो हम कह सकते हैं कि भारतीय सिनेमा हमेशा से नारी सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता आ रहा है। आज का सिनेमा तमाम तरह की बनी बनाई धारणाओं, पारंपरिक ढांचो और मिथकों को तोड़ता है। भारतीय सिनेमा ने अपने समय् की नब्ज को न सिर्फ पकड़ा है बल्कि समाज में बदलाव, अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं को सिनेमा के माध्यम से परिलक्षित किया है। आज का सिनेमा समाज का परिचायक बनता जा रहा है। समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को बहुत अच्छे ढंग से सिनेमा के माध्यम से दिखाया जा रहा है। भारतीय सिनेमा अपने तेवर और कलेवर कथ्य और कथानक सभी स्तरों पर तेजी से बदल रहा है। पुरातनता से नवीनता की ओर महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों और सरोकारों को भारतीय अभिनेत्रियाँ विभिन्न प्रारूपों में उतर कर उनके सामाजिक मानदंडों को प्रस्तुत कर रही हैं। सिनेमा के हर पक्ष में स्त्री अपने वर्चस्व को स्थापित करने में लगी है। भारतीय सिनेमा ने समाज में स्त्री को बराबरी का अधिकार दिलवाने, जागरूक करने, आगे बढ़ने की प्रेरणा देने, घर की चहारदीवारी से मुक्त कराने, उसे सपने दिखाने और उस सपनों को पूरा करने का साहस एवं प्रोत्साहन देकर सशक्त करने का कार्य बखूबी किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुखर्जी, रविंद्र नाथ (1992), भारतीय समाज व संस्कृति, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सिंह, योगेंद्र (1973), भारतीय परंपराओं का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान।
3. सिंह, जे.पी. (1999), सामाजिक परिवर्तन स्वरूप एवं सिद्धांत, हल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
4. गौतम, एस.एस.(2016), हिंदी सिनेमा और दलित, गौतम बुक सेंटर, नई दिल्ली।
5. मनीषा, (2021), हिंदी सिनेमा में अभिव्यक्त दलित यथार्थ, इंशा पब्लिकेशन, दिल्ली।
6. खान, शमीम, (2017), सिनेमा में नारी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. कोरे, सुलभा, (2019) भारतीय समाज हिंदी सिनेमा और स्त्री, अंकिता प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद, उ.प्र.
8. Srinivas] M-N- (1966) Social change in Modern India Bapely and Los Angele, University of California Press.
9. Beauvoir, Simone De, (1946)- The Second Se.

*****